International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 165-166

वाल्मीकि रामायण में छन्द की योजना

प्रवीण शर्मा
शोधछात्र, संस्कृत पालि एवं प्राकृत विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत।

प्रस्तवना

कात्यायन ने छन्द का बहुत स्पष्ट लक्षण बताया है – 'यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः।' अर्थात् जो अक्षरों का परिमाण है, उसे छन्द कहते हैं। हलायुधकोश में 'छन्द' को प़ का पर्यायवाची स्वीकार करते हुए कहा गया हे कि – 'नियतवर्णमात्रादिः शब्दगुम्फभेदः।' अर्थात् निश्चित वर्ण और मात्राओं आदि के आधार पर शब्दों का गुम्फन (योजना) ही छन्द है। यास्कमुनि 'छन्दः' शब्द की व्युत्पत्ति 'छदि' धातु से की है, जिसका अर्थ है – 'ढकना', 'छन्दांसि छादनात्' निरूक्त।

छन्दः शास्त्र के कतिप प्रसिद्ध ग्रन्थ

संस्कृत–भाषा में छन्दःशास्त्र का सबसे पहला और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ पिङ्गल का छन्दःशास्त्र है। वृत्तरत्नाकर ग्रन्थ के रचयिता केदार भट्ट हैं।

छन्दों का विभाजन

मुख्य रूप से छन्दों को दो भागों में विभक्त किया जाता है – वार्णिक एवं मात्रिक। वार्णिक छन्द वे होते हैं, जिनके प्रत्येक चरण में वर्णों की संख्या निश्चित होती है। यथा – अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा इत्यादि। इन वार्णिक छन्दों में वर्णों को ह्स्व एवं दीर्घ गुणों के आधार पर लघु एवं गुरू के रूप में गिना जाता है। लघु – वर्ण के प्रदर्शन के लिये (।) तथा गुरु–वर्ण के लिये (S) चिन्ह का प्रयोग किया जाता है। मात्रिक–छन्दों में प्रत्येक चरण की मात्राओं की गिनती की जाती है। उदाहरणार्थ–आर्या एक मात्रिक छन्द है, तिजसके प्रामि चरण में बारह, द्वितीय चरण में अठारह, तृतीय चरण में बारह तथा चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं।

सुन्दर–काण्ड गत छन्दों का अध्ययन

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण के सुन्दर–काण्ड में भी अनेक छन्द दृष्टिगोचर होते हैं। सुन्दर–काण्ड में सर्वाधिक प्रयोग अनुष्टुप्–छन्द का है, वस्तुतः अनुष्टुप् को ही श्लोक कहा जाता है। अनुष्टुप् छन्द का लक्षण है –

'श्लोके षष्ठं गुरूर्ज्ञेयं, सर्वत्र लघु प चमम्।
द्विचतुष्पादयोर्ह्स्वं, सप्तमं दीर्घमन्ययोः[1]।। इति।

सुन्दर–काण्ड में उपलब्ध अनुष्टुप् छन्द के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं–

ततो रावणनीतायाः सीतायाः शत्रुकर्षणः।
इयेष पदमन्वेष्टुं चारणाचरिते पथि[2]।।

स सागरमनाधृष्यमतिक्रम्य महाबलः।
त्रिकूटस्य तटे लङ्कां स्थितः स्वस्थो ददश्ज्ञ[3]।।
स लम्बशिखरे लम्बे लम्बतोयदसंनिभे।
सत्वमास्थाय मेधावी हनुमान्मारूतात्मजः[4]।।

स निर्जित्य पुरीं लङ्कां श्रेष्ठां ता कामरूपिणीम्।
विक्रमेण महातेजा हनूमान्कपिसत्तमः[5]।।

स निकामं विमानेषु विचरूकामरूपधृक्।
विचचार मपिर्लङ्कां लाघवेन समन्वितः[6]।।

एवमुक्तस्तु हनुमान्राघवेण महात्मना।
सीताया भाषितं सर्वं न्यवेदयत राघवे[7]।।

अथाहमुत्तरं देव्या पुनरूक्तः ससंभ्रमम्।
तव स्नेहान्नख्याघ्र सौहार्दादनुमान्य च[8]।।

सुन्दर–काण्ड में अनुष्टुप्–छन्द के बाद जिस छन्द का सर्वाधिक प्रयोग है, वह है उपजाति। विशेषतः इन्द्रवज्रा एवं उपेन्द्रवज्रा के मेल से बने हुए उपजाति छन्द के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है –

शङ्खप्रभं क्षीरमृणालवर्णमुद्गच्छमानं व्यवभासमानम्।
ददर्श चन्द्रं स कपिप्रवीरः पोप्लूयमानं सरसीव हंसम्[9]।।

ततः स मध्यंगतमंशुमन्तं ज्योत्स्नावितानं मुहुरूद्वमन्तम्।
ददर्श धीमान्भुवि भानुमन्तं गोष्ठे वृषं मत्तमिव भ्रमन्तम्[10]।।

लोकस्य पापानि विनाशयन्तं महोदधिं चापि समेधयन्तम्।
भूतानि सर्वाणि विराजयन्तं ददर्श शीतांशुमथाभिचान्तम्[11]।।

स्थितः ककुद्मानिव तीक्षणशृङ्गो महाचलः श्वेत इवोर्ध्वशृङ्गः।
हस्तीव जाम्बूनदबद्धशृङ्गो विभाति चन्द्रः परिपूर्णशृङ्गः[12]।।

सीतामपश्यन्मनुजेश्वस्य रामय पत्नीं वदतां वरस्य।
बभूव दुःखोपहतश्चिरस्य प्लवङ्गमो मन्द इवाचिरस्य[13]।।

न तत्र काश्चित्प्रमदाः प्रसह्य वीर्योपपन्नेन गुणेन लब्धाः।
न चान्यकामापि न चान्यपूर्वा विना वरार्हां जनकात्मजां तु[14]।।

न चाकुलीना न च हीनरूपा नादक्षिणा नानुपचारयुक्ता।
भार्याऽभवत्तस्य न हीनसत्त्वा न चापि कान्तस्य न कामनीया[15]।।

पक्षी च शाखानिलयं प्रविष्टः पुनः पुनश्चोत्तमसान्त्वावादी।
सुस्वागतां वाचमुदीरयाणाः पुनः पुनश्चोदयतीव हृष्टः[16]।।

निशम्य सीता वचनं कपेश्च दिशश्च सर्वाः प्रदिशश्च वीक्षय।
स्वयं प्रहर्षं परमं जगाम सर्वात्मना राममनुस्मरन्ती[17]।।

उपजाति छन्द के समान ही सुन्दर–काण्ड में इन्द्रवज्रा व उपेन्द्रवज्रा के भी अनेक उदाहरण विद्यमान हैं। इनमें से कुछ उदाहनरण अग्रलिखित हैं –

इन्द्रवज्रा के उदाहरण

स सागरं दानवपन्नगायुतं बलेन विक्रम्य महोर्मिमालिनम्।
निपतय तीरे च महोदधेस्तदा ददर्श लङ्काममरावतीमिव[18]।।

हंसो यथा राजतपञ्जरस्थः सिंहो यथा मन्दरकन्दरसिः।
वीरो यथा गर्वितकुञ्जरस्थश्चन्द्रोऽपि बभ्राज तथाम्बरस्थः[19]।।

उपेन्द्रवज्रा के उदाहरण

स सागरं दानवपन्नगायुतं बलेन विक्रम्य महोर्मिमालिनम्।
निपत्य तीरे च महोदधेस्तदा ददर्श लङ्काममरावतीमिव[20]।।

स हेमजाम्बूनदचक्रवालं महार्हमुक्तामणिभूषितान्तम्।
परार्ध्यकालागुरूचन्दनार्हं स रावणान्तः पुरमाविवेश[21]।।

महागजैश्चापि तथा नदद्भिः सुपूजितैश्चापि तथा सुसद्भिः।
रराज वीरैश्च विनिःश्वसद्भिर्हदा भुजङ्गैरिव निःश्वसद्भिः[22]।।

बभूव बुद्धिस्तु हरीश्वरस्य यदीदृशी राघवधर्मपत्नी।
इमा महाराक्षसराजभार्याः सुजातमस्येति हि साधुबुद्धे[23]।।

उपरोक्त छन्दों के अतिरिक्त वाल्मीकि–रामायण के सुन्दर–काण्ड में वंशस्थ छन्द भी देखने को मिलता है। वंशस्थ छन्द के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं –

सपाण्डुराविद्धविमानमालिनीं महार्हजाम्बूनदजालतोरणाम्।
यशस्विनीं रावणबाहुपालितां क्षपाचरैर्भीमबलैः सुपालिताम्[24]।।

प्रविश्य शापोपहतां हरीश्वरः पुरीं शुभां राक्षसमुख्यपालिताम्।
यदृच्छया त्वं जनकात्मजां सतीं विमार्ग सर्वत्र गतो यथासुखम्[25]।।

स तस्य मध्ये भवनस्य संस्थितो महद्विमानं मणिरत्नचित्रितम्।
प्रतपतजाम्बूनदजालकृत्रिमं ददर्श धीमान्पवनात्मजः कपिः[26]।।

समीक्षमाणां रूदतीमनिन्दितां सुपक्ष्मताम्रायत शुक्ललोचनाम्।
अनुव्रतां राममतीव मैथिलीं प्रलोभयामास वधाय रावणः[27]।।

स मैथिलीं धर्मपरामवस्थितां प्रवेपमानां परिभर्त्स्य रावणः।
विहाय सीतां मदनेन मोहितः स्वमेव वेश्म प्रविवेश रावणः[28]।।

वंशस्थ के छन्द–भङ्ग का एक उदाहरण अग्रलिखित है –

नमोऽस्तु वाचस्पतये सवज्रिणे स्वयंभुवे चैव हुताशनाय।
अनेन चौक्तं यदिदं ममाग्रतो वनौकसा तच्च तथास्तु नान्यथा[29]।।

संदर्भ सूची

1. वृत्तरत्नाकर
2. वा.रा. 5–1–1
3. वा.रा. 75–2–1
4. वा.रा. 5–3–1
5. वा.रा. 5–4–1
6. वा.रा. 5–6–1
7. वा.रा. 5–67–1
8. वा.रा. 5–68–1
9. वा.रा. 5–2–55
10. वा.रा. 5–5–1
11. वा.रा. 5–5–2
12. वा.रा. 5–5–5
13. वा.रा. 5–5–27
14. वा.रा. 5–9–70
15. वा.रा. 5–9–71
16. वा.रा. 5–27–46
17. वा.रा. 5–31–17
18. वा.रा. 5–2–54
19. वा.रा. 5–5–04
20. वा.रा. 5–1–202
21. वा.रा. 5–4–30
22. वा.रा. 5–5–14
23. वा.रा. 5–9–72
24. वा.रा. 5–2–53
25. वा.रा. 5–3–51
26. वा.रा. 5–8–1
27. वा.रा. 5–19–22
28. वा.रा. 5–22–46
29. वा.रा. 5–32–14